वैज्ञानिक दृष्टिकोण और राष्ट्र

नवनीत कुमार गुप्ता

महान भारतीय वैज्ञानिक सर सी.वी. रमन द्वारा 28 फरवरी 1928 को रमन प्रभाव को दुनिया के सामने प्रस्तुत किया गया। सन 1930 में उन्हें इस खोज के लिए नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। उनके इस योगदान की स्मृति में 1987 से हर साल 28 फरवरी को भारत में विज्ञान दिवस मनाया जाता है।

ऐसे महान वैज्ञानिकों से भावी पीढ़ी प्रेरित होकर देश को विज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी स्थान दिलाए इसी मंशा से हर साल विज्ञान दिवस के अवसर पर पूरे देश में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जो एक थीम विषय पर क्रेंदित होते हैं ताकि पूरे देश में वैज्ञानिक चेतना के प्रसार का प्रयास हो सके। इस साल की थीम 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण और राष्ट्र' है। इसे लेकर देश भर के विद्यालयों, विज्ञान केंद्रों एवं विज्ञान संग्रहालयों आदि में व्याख्यान, परिचर्चाएं, क्विज़ एवं पेंटिंग जैसे अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए।

इसी क्रम में 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण और राष्ट्र' पर नई दिल्ली स्थित भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान में दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम को विज्ञान के प्रचार-प्रसार में लगी दो राष्ट्रीय संस्थाओं - विज्ञान प्रसार एवं राष्ट्रीय विज्ञान संचार एवं सूचना स्रोत संस्थान - द्वारा आयोजित किया गया था। इस राष्ट्रीय सम्मेलन में देश भर से आए वैज्ञानिकों, विज्ञान संचारकों, शिक्षकों ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण की आवश्यकता एवं विकास में इसकी भूमिका पर विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास से देश की भाषाई, सांस्कृतिक एवं जातीय विविधता के साथ टिकाऊ विकास की ओर कदम बढ़ाने के प्रयासों पर चर्चा की गई। आज ऐसे महौल में जहां विज्ञान ने जीन स्तर पर सभी इंसानों की समानता को सिद्ध कर दिया है वहां अब जाति, धर्म, भाषा के बंधन निरर्थक हो गए हैं।

असल में वैज्ञानिक दृष्टिकोण जीने की कला के साथ-साथ विकास का आधार भी है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अंतर्गत अवलोकन, प्रयोग, परिणामों के परीक्षण आदि के द्वारा हम किसी भी धारणा, विचार, वस्तु को विज्ञान की कसौटी पर परखते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण व्यक्ति को स्वयं की गलती से भी परिचित कराता है। इसीलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले समाज में तानाशाही या अहंकार नहीं पनप सकता। वैज्ञानिक दृष्टिकोण हमारे आसपास के पर्यावरण, पहाड़, नदियों वगैरह सभी की स्वच्छता को बनाए रखने का भी संदेश देता है। असल में वैज्ञानिक दृष्टिकोण सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय का मूल है।

वैसे आम जनता के लिए तो यह युग विज्ञान का ऐसा युग है जिसमें विज्ञान के तमाम उपकरण हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। हम विज्ञान की खोजों तथा आविष्कारों का भरपूर लाभ उठा रहे हैं। फिर भी हमारे समाज का एक बहुत बड़ा वर्ग आज भी निर्मूल धारणाओं और अंधविश्वासों से घिरा हुआ है। इनमें अनपढ़ और पढ़े-लिखे दोनों ही प्रकार के लोग शामिल हैं। ये लोग झाड़-फूंक, जादू-टोना और टोटकों से लेकर तरह-तरह के भ्रमों पर विश्वास करते हैं जिसके कारण वे वैज्ञानिक चेतना से दूर हैं।

ऐसा नहीं है कि टी.वी. चैनल केवल सामान्य प्राकृतिक घटनाओं की ज्योतिषियों द्वारा अवैज्ञानिक व्याख्याएं प्रस्तुत करवाकर अंधविश्वास फैलाने में योगदान दे रहे हैं। अधिकतर चैनलों में ऐसी घटनाओं के दोनों पक्षों को व्यक्त किया जाता है। कुछ चैनलों पर विज्ञान कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जाते हैं। ऐसे में हमें अपनी बुद्धि का उपयोग करना होगा। यहीं पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण हमारी सहायता करता है। असल में वैज्ञानिक दृष्टिकोण नीर-क्षीर विवेक को आधार प्रधान करता है। इसीलिए देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू समाज की उन्नति में वैज्ञानिक मिज़ाज को आवश्यक मानते थे। नेहरू द्वारा लिखित पुस्तक *भारत की खोज* में देश के नागरिकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास की बात कही

गई थी। इसी के परिणामस्वरूप 1958 में संसद में भारत की विज्ञान और प्रौद्योगिकी नीति प्रस्तुत की गई। किसी देश की संसद द्वारा विज्ञान नीति का प्रस्ताव पारित करने का यह विश्व में पहला उदाहरण था।

नेहरू का विचार था कि वैज्ञानिकों को चाहिए कि वे प्रयोगशालाओं को मात्र वैज्ञानिक अनुसंधान का केंद्र न मानें, बल्कि उनका लक्ष्य यह हो कि जन मानस में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा हो। ऐसा दृष्टिकोण ही उन्नति की रीढ़ है।

प्रकृति के रहस्यों का ज्ञान न होने के कारण अंधविश्वासों का जन्म होता है। विज्ञान प्रकृति के इन रहस्यों का पता लगाता है और रहस्य का पता लग जाने पर उससे जुड़ा भ्रम या अंधविश्वास खत्म हो जाना चाहिए। लेकिन कई बार वैज्ञानिक प्रवृत्ति या वैज्ञानिक सोच की कमी के कारण ऐसा नहीं होता।

हमारे समाज में कई रीति-रिवाज़ आज भी केवल परंपरा के नाम पर चल रहे हैं। आज वे रीति-रिवाज़ तर्क की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। इसलिए हमें ऐसी मिथ्या मान्यताओं को नहीं मानना चाहिए। इन्हीं मिथ्या मान्यताओं और अंधविश्वासों का परिणाम है कि हमारे ही देश के कुछ राज्यों में हर साल सैकड़ों महिलाएं डायन कहकर मार दी जाती हैं। कई तांत्रिक आज भी अबोध बच्चों की बलि दे रहे हैं। तमाम लोग आज भी अज्ञानवश बीमारी का इलाज झाड़-फूंक और गंडे-ताबीज़ों से करवाते हैं। बीमारियां पैदा करने वाले बैक्टीरिया, वायरस, फफूंदें और परजीवी गंडे-ताबीज़ या झाड़-फूंक को नहीं पहचानते। यह समझना चाहिए कि बीमारी का इलाज केवल औषधियों से हो सकता है जो रोगाणुओं को नष्ट करती हैं। अंधविश्वास के कारण हर साल बड़ी संख्या में मरीज़ जान से हाथ धो बैठते हैं।

अबोध पशुओं की बलि देकर भी किसी व्यक्ति की बीमारी का इलाज नहीं हो सकता। बल्कि पालतू पशु आदमी के विश्वासघात का शिकार हो जाता है। हमें यह भी समझना चाहिए कि जन्मपत्री मिलाकर अगर विवाह सफल होता तो आपसी कलह का शिकार होकर इतने जोड़े तलाक न लेते। वास्तु शास्त्र और फेंगशुई का भी कोई तार्किक या वैज्ञानिक आधार नहीं है।

समाज में आए दिन किस्मत बदल देने, गड़ा धन दिलाने, सोना-चांदी दुगना कर देने वाले ढोंगी लोगों को ठग रहे हैं। इसका कारण भी वैज्ञानिक प्रवृत्ति की कमी ही है। यदि तार्किक ढंग से सोचा जाए तो समाज में ऐसी घटनाएं नहीं होंगी।

समाज में वैज्ञानिक प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए ज़रूरी यह है कि हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाएं। किसी भी घटना के रहस्य को वैज्ञानिक दृष्टि से समझने का प्रयास करें, उसके बाद ही उस पर विश्वास करें। तभी, समाज में वैज्ञानिक चेतना आएगी और समाज आगे बढ़ेगा। शायद तब जो समाज बनेगा उसका सपना ही सर सी.वी. रमन जैसे वैज्ञानिकों ने देखा होगा। इसलिए हम सभी को वैज्ञानिक चेतना को अपनाते हुए उन्नत समाज की रचना के लिए प्रयास करना चाहिए। ***(स्रोत फीचर्स)***

वर्ग पहेली 115 का हल

इं	ट	र	ने	ट				मू
द्र		सा		का	ल	पु	रु	ष
ध	ना	य	न			मं		क
नु		न		प	रा	ग		
ष	ष्टि			व			पा	रा
		सू	ज	न		ग		म
प्र		र			सं	वे	द	ना
रो	ग	ज	न	क		ष		थ
ह				द	क्षि	णा	य	न